ॐ

श्रीमद्भगवद्गीता

—०×०—

पहला अध्याय

१

धृतराष्ट्र उवाच

धर्म खेत कुरुक्षेत्तर आके जुड़ के युध दा रंग रचा के
कौरव पांडव राज दुलारे की करदे दस्स संजय प्यारे

२

संजय उवाच

दूर्योधन ने जद राजा जी पांडू सैना सजदी वेखी
द्रोण गुरू दी शरणी आया आके मुख थों बचन सुणाया

३

गुरु देव सैनां वल वेखो पांडू पुत्रां दा दल वेखो
धृष्टद्युमन शिश दी चतुराई व्यूह रचना उस खूब रचाई

४

भीम अर्जुन जहे शानां वाले योधे तीर कमानां वाले
महारथी 'युयुधान' नूं वेखो द्रुपद विराट दी शान नूं वेखो

५

'धृष्टकेत' 'चिकतान' नूं वेखो 'काशी राज' बलवान नूं वेखो
'पुरुजित' 'कुन्तीभोज' नूं वेखो 'शिवी' वीर दे ओज नूं वेखो

६

युधामन्यु रणधीर नूं वेखो उत्तमौजा वीर नूं वेखो
अभिमन्यु ते द्रौपदी जाए महारथी सब रण विच आए

७

साडे बल जो योधे सूरे नाम सुनांवां पूरे पूरे
जो सैना दे नायक मेरे वर्णन करां मैं सन्मुख तेरे

८

आप तुसी भीषम ते कर्ण कृपाचार्य बलवान विकर्ण
अश्वत्थामा वीर कहावे भूरी श्रवा तेज वखावे

९

होर कई योधे बलकारी कई तरां दे शसतर धारी
मेरी खातर लड़न नूं आए जानां सदके करन नूं आए

१०

सैना भीषम रक्षक जिस दा उस दा बल पूरा नहीं दिसदा
पांडू सैना भीम संभाली ओह दिसदी बहुते बल वाली

११

थांओं थांई हुण हट जाओ मोरचयां ते सब डट जाओ
रस्ते रोक जान ते लड़ना भीषम जी दी रक्षा करना

१२

भीषम जी तद संख वजाया खुशी विच दुर्योधन आया
उन्ही वाज संख इयों वजदा जियों बेले विच शोंह पिआ गजदा

१३
जंगी बाजे बजदे सारे तुरम तूतियां ढोल नगारे
संखां ऐसा शोर मचाया धरती ते आकाश हिलाया

१४
चिट्टे घोड़े जुत्ते अग्गे जङ्गी रथ किहा सोहणा लग्गे
रथ विच अर्जुन कृष्ण सुहांदे दिव्य अलौकिक संख बजांदे

१५
'पंचजन्य' श्री कृष्ण बजाया 'देवदत्त' 'अर्जुन' गरजाया
'भीम' भयंकर कर्म कमावे 'पौंडर' नामी संख बजावे

१६
वीर युधिष्टर कुन्ती जाया संख 'अनन्त विजय' गरजाया
संख 'नकुल' सहदेव बजांदे जो 'सुघोख' 'मणी पुष्प' कहांदे

१७
काशी राजा धनुप घमंडी महारथी रण वीर 'शिखंडी'
'धृष्टद्युमन' ते 'विराट' एह सारे सात्यकी जो न रण विच हारे

१८
राजा 'द्रुपद' ते 'द्रौपदी' जाए 'अभिन्यु' महाबाहू कहाये
सारे याधे वीर जवान आपो अपने संख बजान

१९
संखां ऐसा शोर मचाया धरती ते आकाश गुंजाया
नाद भयंकर सुन संखादे कौरवां दे हिरदे घबरांदे

२०
कौरव रण विचकार खड़े सन युद्ध लई तय्यार खड़े सन
अर्जुन जिसदा कपी निशान पकड़ लिया उस तीर कमान

२१

बोलिया अर्जुन हे गिरधारी हे माधव हे कृष्ण मुरारी

अर्जुनोवाच

रथ नूं हे भगवान चलाओ दो सैना विचकार लै जाओ

२२

वेख लवां मैं केहड़े केहड़े रण विच नाल लड़नगे मेरे
कौन सूरमें मावां जाए युद्ध कामना कर के आए

२३

वेखां कौन कौन बलवान केहड़े योधे सूर जवान
दुर्योधन दा पक्ष करनगे उस मूरख लई लड़न मरनगे

२४

संजय उवाच

जद अर्जुन ने हे राजा जी एह गल ऋषिकेष नूं आखी
रथ नूं तद भगवान चलांदे दो सैनाँ विचकार लै जांदे

२५

भीषम द्रोण होर कई राजे दिसदे सैना विच विराजे
कृष्ण कहे हे पारथ प्यारे वेख खड़े ने कौरव सारे

२६-२७

अर्जुन ने जद नज़र उठाई वेखे बन्धू मित्तर भाई
सौहरे चाचे मामे वेखे पुत्तर पिता पितामे वेखे
गुरू संबन्धी पोते वेखे विच मैदान खलोते वेखे

२८

मोह वस हो अर्जुन घबराया मुख थों फिर एह वचन सुनाया

अर्जुनोवाच

सज्जन युद्ध करन सब आए वेख वेख मेरा मन घबराए

२९

हथ पैर मेरे फिरदे जान मूंह पिया सुकदा है भगवान
देह कंबदी है कृष्णा मुरारी उठन लूं खड़े गिरधारी

३०

गांडिव धनुष खिसकदा जावे तपे शरीर ते मन घबरावे
हे भगवान की दस्सां तैनूं रण विच ठैहरन मुशकिल मैनूं

३१

हे मधुसूदन कृष्णा मुरारे पुठे लच्छन देखां सारे
रण विच सज्जन मार मुकावां इस थीं की वडयाई पावां

३२

सज्जन मार जेत न चाहवां क्यों सुख भोगां राज कमावां
ऐसा राज भोग की करना इस जीवन थीं चंगा मरना

३३

जिन्हां खातर राज मैं चाहवां राज भोग सुख ताज मैं चाहवां
सो सब आए युद्ध करन नूं त्याग प्राण धन खड़े मरन नूं

३४

पुत्तर पोते पिता पिताये सौहरे साले समधी मामे
गुरू मित्र चाचे ते ताए सारे सज्जन रण विच आए

३५

त्रैलोकी दा राज धिक्कारां मैं पर सज्जन रुदे न मारां
तुच्छ चीज पृथवी दा राज हे मधुसूदन हे महाराज
भावें रण विच मैं मर जावां सज्जन मार राज न चाहवां

३६

जे मारां मैं कौरवां ताईं इस विच मैंनू सुख ते नाहीं
भावें चुक लई अत्त मरावां मार इन्हां क्यों पाप कमावां

३७

धृतराष्ट्र दे बेटे जेहड़े हे माधो सब वीर ने मेरे
कीकण मारां भाईयां ताईं मार इन्हां सुख मिलना नाहीं

३८

पापी सो जो कुल नूं मारे मित्रां नाल जो वैर गुजारे
लालच विच बुद्धी भरमाई कौरवां नूं एह समझ न आई

३९

कुल हत्या दे जो जो औगुण मैं तां सारे जाणां भगवन
फिर मैं पाप कमावां क्यों कुल घातक सदवावां क्यों

४०

कुल हत्या थों एह फल पाणा नाश होवे कुल धर्म पुराणा
जद कुल धर्म नाश हो जावे वेधर्मी तद ज़ोर वखावे

४१

वेधर्मी तद लोकी होण इस्त्रीआं तद विगड़ खलोण
नारीआं विगड़ जान जद भगवन वर्णहीन बालक तद जम्मण

४२

वर्णहीन जिस कुल विच आवे सारी कुल नूं नरक पहुंचावे
तरपण पिंड होवण सब नास पितर करन नरकां विच वास

४३

वर्णहीन जिस कारण जम्मन ओह सब दोष पाप मधुसूदन
कुलघातक दी कुल विच आंदे सब कुल धर्म नाश हो जांदे

४४

कुल धर्मां नूं जो छड्ड जावण ओह तां सदा नरक नूं पावण
हे भगवान देवकी जाया साडे सुणन विच्च एह आया

४५

सज्जन मार मुकावण आए ? ऐडा पाप कमावण आए ?
राज सुखां दे लालच कारन लग्गा सां मैं सज्जन मारन

४६

बेहथियारे नूं जे भगवन कौरव मैंनूं रण विच मारन
इस थों चंगा होर की लोड़ां ऐसी मौत कदे न मोड़ां

४७

संजय उवाच

इतने वाक बोल के अर्जुन बैठ गया रथ विच हे राजन
मोह वस हो पारथ घबरावे हथों धनुष खिसकदा जावे

श्रीमद्भगवतद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण अर्जुन संवाद दा अर्जुन विशाद योग नाम
पहला अध्याय समाप्त होया ।